Volume: 4 Issue: 2 Pages: 74-76

भवभूति के रूपकों में जल संरक्षण की अवधारणा

[*1] डॉ. कृष्ण कुमार भास्कर

[*1] सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभागए डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, करगीरोड कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 21/Jan/2025
Accepted: 26/Feb/2025

***Corresponding Author**
डॉ. कृष्ण कुमार भास्कर
सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभागए डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, करगीरोड कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश
महाकवि भवभूति संस्कृत के लब्ध प्रतिष्ठित कवियों में माने जाते है। भवभूति पर्यावरणीय चित्रण के मर्मज्ञ, सिद्धहस्त कवि है जो अपनी तीनों रचनाओं में पर्यावरण के विविध स्वरूपों को आलंबन और उद्धीपन दोनों प्रकार से सम्यक रूप में चित्रित किया है। काव्यदर्श के रचनाकार आचार्य दण्डी ने भी महाकाव्य के लक्षण का वर्णन करते हुए कहते है कि काव्य मे नगर, समुद्र, शैल, ऋतु, चन्द्रमा, सूर्य, वन-उपवन, विहार, जलक्रीड़ा आदि का वर्णन किया जाना चाहिए जिससे काव्यगत सौन्दर्य मे वृद्धि हो सके इसी प्रकार साहित्यदर्पण के रचनाकार आचार्य विश्वनाथ कहते है कि महाकाव्य मे संध्या, सूर्य, चन्द्रमा, रात्रि, प्रदोषकाल, अन्धकार, दिन, प्रातः काल, मध्यान्तर, पर्वत, ऋतु, वन, समुद्र के सौन्दर्य का मनोरम चित्रण किया जाना चाहिए। अतः महाकवि भवभूति ने भी अपने रूपकों में पर्यावरण के संदर्भ में जल तत्व का वृहद् वर्णन किया है और यह शिक्षा दिया है कि सभी सामान्य व्यक्ति भी जल को बचाने की पूरा प्रयास करे जिससे आने वाली पीढ़ी को जल संकट का सामना करना न पड़े क्योंकि संपूर्ण पृथ्वी में जल की मात्रा लगभग 70 से 75 प्रतिशत है किन्तु मानव उपयोगी जल की मात्रा उससे बहुत कम अर्थात् मात्र 3 प्रतिशत लगभग है और विश्व में जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिक विकास ने जल की जरूरत, आवश्यकता या खपत की मात्रा को बढ़ा दिया है इसलिये जल संरक्षण अतिआवश्यक हो गया है इसलिये महाकवि भवभूति अपने रूपकों में जल को स्वच्छ और संरक्षित करने के लिये प्रेरित करते है जिसका वर्णन इस शोध-पत्र में प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्दः नगर, समुद्र, शैल, ऋतु, चन्द्रमा, सूर्य, वन-उपवन, विहार।

प्रस्तावना:

प्रकृति एवं मनुष्य के बीच का रिश्ता प्राचीन एवं अटूट है लेकिन मनुष्यों के सभ्य होने के बाद पर्यावरण एवं मनुष्य के बीच का यह रिश्ता कम होने लगा हैं जिसके कारण प्रकृति प्रदूषण का स्तर बढते जा रहा है जिसमें जल प्रदूषण सबसे अधिक है इसलिये व्यक्तियों का समूह तो दूर हम अपने व्यक्तियों को साफ-सुथरा जल दे पाने में असक्षम सिद्ध हो रहे है। दरअसल इसकी सबसे बड़ी वजह हमारी क्षेत्र में फैला प्रदूषण है। ज्यादा से ज्यादा लाभार्जन की दृष्टि से हमारे नेतृत्वकर्ता अपनी योजनाए बनाते हैं लेकिन इसका सीधा लाभ उन नागरिकों को नहीं मिल पाता जिन पर उनका हक होना चाहिये। एक तरफ जहा हम तोड़-फोड़ और सडक चैड़ीकरण के जरिये शहर के सौंदर्य को निखारने की कवायत कर रहे है और वहीं दूसरी तरफ हम अपनी ही जनता की मूल आवश्यकताओं की पूर्ति तक नही कर पा रहे हैं। प्राचीन काल से ही भौतिक पर्यावरण के पंच तत्वों में जल तत्त्व को देवस्वरूप मानकर पूजा जाता रहा है ताकि इन तत्वों के प्रति हमारे मन एवं मस्तिष्क में श्रद्धा का भाव हमेशा रहे जिससे हम इन्हें क्षति पहुंचाने का प्रयास न करें और प्रकृति में स्वच्छ जल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहे किन्तु बढ़ते औद्योगिकीकरण, नगरीकरण व जनसंख्या विस्फोट ने इन पंचतत्वों में जल को सबसे अधिक प्रदूषित किया है इस प्रदूषण को रोकने का प्रयास करना होगा प्रदूषण रोकने के लिए उद्योग, धंधो को बंद नही किया जा सकता और न ही इस युग के मशीनीकरण को रोका जा सकता है बल्कि इसके लिए हमें उद्योगों को स्थापित करते समय ऐसे उपाय करने होंगे जो जल को प्रदूषित करने से रोक सके इसके लिए भौतिक प्रयासों के साथ-साथ जनसाधारण में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता एवं चेतना का विकास करना होगा साथ ही सामाजिक संगठनों को मिल-जुल कर इस व्यापक समस्या को सुलझाने का प्रयास करना होगा। प्रायः हमारे देश में हर काम सरकार आधारित ही समझ लिया गया है, जबकि इस दिशा में केवल जनसहयोग ही सार्थक है इस दृष्टि से महाकवि भवभूति के रुपकों में वर्णित जल संरक्षण की शिक्षा एवं अवधारणा का बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका है जिसका विस्तारपूर्वक वर्णन इस प्रकार प्रस्तुत है।

भवभूति के रूपकों में जल तत्व एवं संरक्षण की अवधारणा

जल सृष्टि संरचना का मूलभूत तत्व है सृष्टि रचना के आरंभ में सभी जगह केवल जल ही व्याप्त था जल को ब्रम्हा जी के सर्वप्रथम रचना माना जाता है अतः सृष्टि के आरंभ से ही जल विद्यमान था जल के द्वारा ही सृष्टि प्रक्रिया पूर्ण हुई ऐसा कहना अतिश्योक्ति नही होगी क्योंकि आज विज्ञान भी जल की महत्ता को स्वीकार करता है संपूर्ण पृथ्वी के एक तिहाई भाग में जल ही विद्यमान है, मानव शरीर का निर्माण साठ से सत्तर प्रतिशत जल से ही हुआ है। संस्कृत साहित्य के लौकिक कोष में जल को कमलम्, जलम्, जीवनम्, पानीयम् आदि नाम से संबोधित किया गया है जल संपूर्ण जीव जगत के जीवन का आधार है बिना जल के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है इसलिए जल को 'जीवन' कहा गया है अतः वर्तमान में जल के संदर्भ में यह उक्ति प्रसिद्ध है कि 'जल ही जीवन है', 'जल है तो कल है।' अतः जल पर्यावरण के प्रमुख घटक है जो मनुष्य एवं समस्त प्राणी जगत की नैसर्गिक आवश्यकता है। वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुसार पृथ्वी में लगभग 3 प्रतिशत जल ही मात्र स्वच्छ एवं उपयोग में लायी जा सकती है या शुद्ध है। जल के निर्माण में समुद्री जल मेघ के रूप में परिवर्तित होकर वर्षा करती है और यही मेघ पृथ्वी पर वर्षा के रूप में स्वच्छ एवं शुद्ध जल के रूप में प्राकृतिक जल स्रोतों का निर्माण करती है और इसी में सभी जीव-जन्तुओं का जीवन निर्भर है। जल को स्वच्छ और निर्मल बनाये रखना सभी का उत्तरदायित्व है। प्राचीनकाल में वैदिक आर्य जल की महत्ता से परिचित थे इसलिए यजुर्वेद में समुद्र, कुए, पोखर आदि के सत्रह प्रकार के जलों का वर्णन प्राप्त होता है जल को माता के समान मानकर उसका आदर किया जाता था और यह प्रार्थना की जाती थी कि वह अपनी शीतलता से स्नान करने वालों को शुद्ध करें, अपने सारभाग (घृत) से पवित्र करें। वेदों में राजा को निर्देश दिया गया है कि वह राट् में जल कूपों तंडाग सरोवर औषधी और वनों को नष्ट न करें बल्कि उसकी रक्षा करें और जो उसे क्षति पहुँचाएं उसे उचित दण्ड दिया जाये इसलिए हमारे मनीषि जल के विषय में चिन्तित रहते थे और उसे स्वच्छ एवं निर्मल बनाये रखने का हर संभव प्रयास करते थे। स्वच्छ एवं निर्मल जल को औषध रूप में महत्वपूर्ण बताते हुए अथर्ववेद के इस मंत्र में इस प्रकार कहा गया है -

आप इद् वा उ भेषजीरापो अमीवचातनीः।
आपो विश्वस्य भेषजीस्त्वा मुञ्चन्तु क्षेत्रियात्।।1

अर्थात जल समस्त दुःखों, रोगों को दूर करने वाला, सर्वोत्तम औषधी तत्व है। खेती आदि में जल का प्रयोग करने जल को पान एवं स्नान करने से दरिद्रता और रोग दूर हो जाते है।
इसी संदर्भ में जल को मातृदेवी मानकर उसकी रक्षा करने का वर्णन ऋग्वेद में इस प्रकार प्राप्त होता है -

आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो धृतप्वः पुनन्तु।
विश्वं हि रिप्र प्रवहन्ति देवीरूदिदाभ्यःशुचिरापूत एमि।।2

यहा जल को कल्याणकारी बताते हुए कहा जा रहा है कि जल सभी के लिए कल्याणकारी है जैसे माता अपने पुत्र का कल्याण करती है ठीक उसी प्रकार जल भी माता के समान अपने पुत्रों का कल्याण करती है, जल प्रदत्त जीवन समृद्ध हो जाता है अतः जल अमृत है, जीवन शक्ति है और सभी औषधियों का रस है।
इसलिए इस जल का संरक्षण करने का निर्देश यजुर्वेद के इस मंत्र में दिया गया है जो इस प्रकार है -

माऽषो मौषधीर्हिंसीः।3

किन्तु यह अत्यन्त दुःखद है कि इस औषध रूप, माता स्वरूप, जीवन रक्षक जल को प्रदूषित किया जा रहा है कारखानों, उद्योगों व सीवर के गंदे पानी को नदियों, तालाबों, समुद्रों में छोड़ा जा रहा है, तालाबों के पानी को मवेशी, डिटरजेंट, रासायनिक युक्त साबुन का प्रयोग कर दूषित किया जा रहा है तथा कृषि उर्वरकों, रासायनिक खादों का प्रयोग भी पानी को दूषित कर रहा है। इसलिए इन सभी कारणों से विभिन्न प्रकार के रोग, बिमारी से मानव एवं जीव-जन्तु ग्रसित हो रहे है। डायरिया, उल्टी-दस्त, मलेरिया, फायलेरिया, टायफाइड, पक्षाघात आदि रोग बढ़ रहे है और बहुत से लोगों को अपना जान भी इन रोगों से गवांना पड़ रहा है पशु-पक्षी भी इन दूषित जलों के प्रयोग से अनेक संक्रामक रोगों के शिकार हो रहे है।
अतः जिस प्रकार हमारे वैदिक ऋषि मुनि, जन अपने आस-पास के जल स्रोतों की रक्षा करते हुए उस जल को स्वच्छ एवं शुद्ध रखते थे माता स्वरूप पूजते थे ठीक उसी प्रकार हमें जल की महत्ता को समझते हुए आचरण करनी होगी तथा जल को प्रदूषण रहित बनाने का प्रयास करना होगा।
इसी संदर्भ में जल की स्वच्छता और महत्ता को महाकवि भवभूति ने भी अपने नाटक में उद्धृत किया है तथा जल को रक्षक, उद्धारक के रूप में चित्रित किया है जो इस प्रकार है -

सीता - एसा प्रसन्नपुण्य सलिला भगवती भागीरथी।।4

अर्थात् यहा सीता गंगा के स्वच्छ एवं शुद्ध जल को स्मरण कर रही है। इसी संदर्भ में राम सीता से कहते है कि राजा भागीरथ हर प्रकार के कष्टों का विचार किये बिना अपनी घोर तपस्या से हे भगवती तुम्हारे जल के स्पर्श मात्र से चिरकाल के पश्चात् उद्धार किया। अर्थात गंगा के जल को ग्रहण करने वालों का कष्ट दूर हो जाता है जिसका चित्रण भवभूति ने इस श्लोक में किया है -

अगणिततनूतापं तप्त्वा तपांसि भागीरथो।
भगवती! तव स्पृष्टानभ्दिश्चिरादुद्दीधरत्।।5

अर्थात हे गंगा तुम्हारे जल के स्पर्श करने से ही चिरकाल के बाद उद्धार हुआ।
भवभूति ने अपने तीनों नाटकों में जल के विविध रूपों का वर्णन किया है जिसमें जल को निर्मल, शीतल, शुद्ध, स्वच्छ, मधुर आदि विशेषण से अलंकृत किया है तथा जल में ही राम के दोनो पुत्र लव-कुश के जन्म का वर्णन इस प्रकार किया है -

समाश्वसिहि कल्याणि दिष्टया वैदिहि वर्धसे।
अन्तर्जले प्रसूताऽसि रघुवंश धरौ सुतौ।।6

अर्थात् पृथ्वी और गंगा दोंनों देवियाॅ कहती है कि हे मंगलवती वैदेही। आश्वस्त हो जाओ अब तुम भाग्य से बढ़ रही हो तुमने जल के अंदर रधुवंश के प्रतिष्ठापक दोंनों पुत्रों को जन्म दिया है।
महाकवि ने स्वच्छ एवं निर्मल जल की आवश्यकता और उसके महत्व का प्रतिपादन करते हुए तीर्थ जल को परिष्कृत और शुद्ध बताया तथा इसी स्वच्छ व शुद्ध जल को वन में तपस्वी घोर तप के समय ग्रहण करते थे। नदियों में जल विहार का भी वर्णन इस प्रकार है -

वध्वा सार्धं पयसि विहरन्सोऽयमन्येन दर्पा-
दुद्यमेन द्विरपपतिना सन्निपत्याभियुक्तः।।7

अर्थात् यहा सीता कह रही है कि यह वही गज शावक है जो अपने वधू के साथ जल में विहार करता हुआ किसी दूसरे गजेंद्र के द्वारा भयभीत कर दिया गया है।

उत्तररामचरितम् में जल की भयावहता या प्रचण्ड रूप का भी वर्णन इस प्रकार प्राप्त होता है -

भित्त्वा भित्तवा प्रसरति बलात् कोऽपि चेतोविकारः –
स्तोयस्येवा प्रतिहतरयः सैकतं सेतुमोघः।।8

अर्थात् अप्रतिरूद्ध वेग वाला जल प्रवाह बालू से बने पुल को ढहा देता है। इस प्रकार महाकवि ने अपने रुपकों में जल के वृहद रुपों का वर्णन प्रस्तुत किया है जो स्वच्छ जल की आवश्यकता एवं महत्त्व को प्रतिपादित करती है और उसके संरक्षण व संवर्धन के लिये प्रेरित करती है।

निष्कर्ष:

इस प्रकार महाकवि भवभूति ने अपने रूपकों में वरदा, सिंधु, गोदावरी, गंगा, यमुना अनेक पर्वतीय नदियों, झरनें, समुद्री जल तथा अनेक सरोवर व तालाबों के शुद्ध, निर्मल, शीतल व मधुर जल का वर्णन किया है तथा मालतीमाधव के प्रथम अंक के मंगलाचरण श्लोक में ही नदियों के तरंगों से सामाजिकों, जनसाधारण की रक्षा करने हेतु वंदना किया गया है इससे स्पष्ट है कि भवभूति ने अपने नाटकों में जल की आवश्यकता, महत्त्व का प्रतिपादन किया और यह शिक्षा प्रदान किया है कि हमें जल के महत्त्व को समझते हुए जल को दूषित होने से उसकी रक्षा करना होगा तथा अपने उपयोग, उपभोग को अनुशासित व संतुलित करते हुए जल संरक्षण को प्रोत्साहित करना होगा साथ ही जल के प्राकृतिक, कृत्रिम स्रोतों की सफाई और जल की स्वच्छता का ध्यान रखना होगा जिससे स्वस्थ पर्यावरण की अवधारणा सार्थक सिद्ध हो सके। भवभूति ने अपने ग्रंथों में जो स्वच्छ, निर्मल, शीतल, मधुर और नूतन जल की अवधारणा को स्पष्ट किया है हमें भी जल की निर्मलता, शुद्धता को बनाये रखने, संरक्षित करने का निरंतर प्रयास करना होगा।

संदर्भ सूची:

1. शास्त्री श्री सत्यवीर (2017), अथर्ववेद, डी. पी. बी. प्रकाशन दिल्ली तृतीय काण्ड सूक्त-7 मंत्र-5.
2. शास्त्री श्री सत्यवीर (2017), ऋग्वेद, डी. पी. बी. प्रकाशन दिल्ली, दशम मण्डल सूक्त-17 मंत्र-10.
3. शास्त्री श्री सत्यवीर (2017), यजुर्वेद डी. पी. बी. प्रकाशन दिल्ली, अध्याय-6 मंत्र-22.
4. त्रिपाठी डॉ. रमाकान्त, उत्तररामचरितम्, चैखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, पृ. क्रं.- 38, ISBN -978-93-81484-64-7.
5. त्रिपाठी डॉ. रमाकान्त - उत्तररामचरितम्, चैखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, पृ. क्रं. 38, अंक 1 श्लोक 23. ISBN -978-93-81484-64-7.
6. त्रिपाठी डॉ. रमाकान्त, उत्तररामचरितम्, चैखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, अंक-7 श्लोक-3. ISBN -978-93-81484-64-7.
7. त्रिपाठी डॉ. रमाकान्त, उत्तररामचरितम्, चैखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी अंक-3 श्लोक -6. ISBN -978-93-81484-64-7.
8. त्रिपाठी डॉ. रमाकान्त, उत्तररामचरितम्, चैखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी अंक-3 श्लोक- 36. ISBN -978-93-81484-64-7.